प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

सुनियोजित औद्यानिकी विषय पर राज्य स्तरीय कार्यशाला-सह-संगोष्ठी का आयोजन

पंतनगर। ९ मार्च २०१८। पंतनगर विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के उद्यान विज्ञान विभाग के सुनियोजित खेती विकास केन्द्र द्वारा कृषकों की आय दोगुनी करने के लक्ष्य से 'सुनियोजित औद्यानिकी' विषय पर एक कार्यशाला-सह-संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्याशाला के उद्घाटन सत्र के अवसर पर मुख्य अतिथि अधिष्ठाता कृषि, डा. जे. कुमार के साथ परियोजना अधिकारी, डा. सी.पी. सिंह; निदेशक अनुसंधान, डा. एस.एन. तिवारी; एवं सह परियोजना अधिकारी, डा. पी.के. सिंह मंचासीन थे। यह कार्यक्रम भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के बागवानी में प्लास्टिकल्चर के उपयोग संबंधी राष्ट्रीय समिति द्वारा प्रायोजित किया गया।

अधिष्ठाता कृषि, डा. जे. कुमार ने कहा कि पिछले ४० वर्षों के दौरान कृषि योग्य भूमि आधी हो गयी और १० सालों में खेती में प्रयोग होने वाले निवेशों की आय बढ़ी है, जिसकी वजह से देश के लगभग ५२ प्रतिशत से अधिक किसान खेती छोडकर अपना रूख दूसरी तरफ करने को तत्पर है। उन्होंने यह भी बताया कि अब किसानों को थोड़ी जोत, थोड़े पानी, और थोड़े संसाधन में काम करके उत्पादन, उत्पादकता और अपनी आय को बढ़ाना होगा, ताकि किसान खेती से जुडे रहे, इसके लिए परापरगत फसलों के साथ खेती में विविधिकरण फसलों का समावेश करने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि किसानों की आय दोगुनी, उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाकर ही की जा सकती है और यह सिर्फ वैज्ञानिक तरीके से ही संभव है। डा. जे. कुमार ने किसानों से निवेदन किया कि वे केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी ले, प्रशिक्षण करें और अपने खेतों में उसका समावेश करें, जो उनकी आय को बढ़ाने में सहयोग प्रदान करेंगे।

निदेशक शोध, डा. एस.एन तिवारी ने कहा कि पराम्परागत खेती से किसानों का सिर्फ भरण-पोषण हो सकता है लेकिन भविष्य सुरक्षित नही, इसके लिए किसान भाईयों को औद्यानिकी फसलों की खेती को अपनाना होगा। उन्होंने यह भी बताया कि अगर किसान भाई ग्रीन हाऊस में बेमौसमी सब्जियों और फलों की खेती करते है और उसमें टपक सिंचाई पद्धति और नवीन तकनीक का प्रयोग करते है तो खेती में निवेश भी कम होगा और उत्पादन अधिक प्राप्त हो सकेगा। उन्होंने यह भी बताया कि किसानों को नवीन पद्धतियों को लगाने के लिए केन्द्रीय और राज्य स्तर पर सब्सिडी भी दी जाती है।

कृषि विकास केन्द्र के परियोजना समन्वयक, डा. सी.पी. सिंह ने कार्यक्रम के प्रारम्भ में सभी उपस्थित अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए बताया कि इस कार्यक्रम में राज्य के विभिन्न जनपदो से लगभग १५० से अधिक किसानों ने प्रतिभाग किया। कृषि विकास केन्द्र के सह परियोजना अधिकारी, डा. पी.के. सिंह ने कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापित किया। इस कार्यक्रम के दौरान अतिथियों द्वारा कार्यक्रम स्मारिका का विमोचन भी किया गया।

स्मारिका का विमोचन करते अधिष्ठाता कृषि, डा. जे. कुमार एवं अन्य अतिथिगण।

किसानों को सम्बोधित करते अधिष्ठाता कृषि, डा. जे. कुमार।